Red Wings
Page No. ___ Date __/__/20__

पाठ = 5
प्रेमचंद के फटे जूते (हरिशंकर परसाई
कक्षा नौवीं

प्र० हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-2 सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं ?

उ० प्रेमचंद 'सीधा-साधा एवं सरल जीवन' जीने में विश्वास रखते थे। वे 'बनावट से कोसो' दूर थे। उन्होंने अपनी वेशभूषा पर कभी विशेष ध्यान नहीं दिया। वे जानते थे, वे जैसे थे, वैसे ही लोगों को दिखाई देते थे।

प्रेमचंद 'स्वाभीमानी थे' उन्होंने दिखावा करने के लिए किसी से भी कोई भी चीज माँगकर प्रयोग नहीं की।

प्रेमचंद 'समझौतावादी' नहीं थे। वे अपने मन के वसूलों पर टीके रहते थे, चाहे उन्हें इसकी कितनी ही कीमत क्यों न चुकानी पड़ी हो। प्रेमचंद एक महान लेखक थे।

प्र०3 नीचे दी गई पंक्तियों में निहीत व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

क) जूते हमेशा _ _ _ _ _ _ होती है।

उ० जूता सदा ज्यादा कीमत रखता है, जो जूतों को ठोकर मारना जानते हैं, टोपी वाले उसके सामने झुकते हैं। अब तो इस जूते की कीमत और भी बढती जा रही है।

ख तुम परदे - _ _ - रहे हैं।

उ० आज के जमाने में परदा रखना अर्थात दिखावा रखना आवश्यक हो गया है। हम जैसे सामान्य लोग इस पर जान छिड़क रहे हैं। प्रेमचंद शायद परदे का महत्त्व नहीं जानते थे, इसलिए वे दिखावा में विश्वास नहीं रखते थे। वे जैसे थे, वैसे ही लोगों को दिखाई देते थे।

ग जिसे — — — — — — — — दो

उ० प्रेमचंद जिस व्यक्ति या वस्तु को गंदा या गलत समझते थे। उसकी ओर पैर का इशारा करते थे, तब वे हाथ से इशारा नहीं करते थे।

प्र०५ पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी? लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि 'नहीं, इस आदमी की अलग-२ पोशाकें नहीं होंगी। आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजह हो सकती है?

उ० पहली बार लेखक सोचता है कि प्रेमचंद जैसा साहित्यकार इतनी मामूली वेशभूषा में फोटो खिंचवाता है, तो निश्चय ही वह अपने सामान्य जीवन में इससे भी घटिया पोशाक पहनता होगा परन्तु थोड़ी देर बाद ही वह अपना विचार बदल देता है। उसे ऐसा लगता है कि प्रेमचंद कभी बनावटी जीवन जीने में विश्वास ही नहीं करते थे। अलग-अलग अवसरों पर भी उनकी अलग-अलग पोशाक नहीं होती थी। वे उनके जीवन की सादगी को जान गए थे।

प्र०६ आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन-सी बातें आकर्षित करती हैं?

उ० इस व्यंग्य को पढ़कर हमें लेखक की निम्नलिखित बातें आकर्षित करती हैं —:

1. लेखक स्पष्टवक्ता है। इसलिए वह सच कहने से किसी से नहीं डरता।

2. लेखक प्रेमचंद जैसे महान लेखक पर भी व्यंग्य करने से नहीं चूकता।

3. अप्रत्यक्ष रूप से लेखक प्रेमचंद की गरीबी का का यथार्त अंकन कर देता है।

4. लेखक की भाषा - शैली सरल एवं सुबोध है।

प्र०6 पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उ० इस पाठ में 'टीले' शब्दों का प्रयोग ताकतवर विरोधियों की ओर इंगित करने के लिए किया गया होगा। शायद वे प्रेमचंद की राह में बाधक बनकर खड़े हो गए होंगे।

प्र०7 प्रेमचंद के फटे जूते को आधार बनाकर परसाई जी ने यह व्यंग्य लिखा है, आप भी किसी व्यक्ति की पोशाक को आधार बनाकर एक व्यंग्य लिखिए

उ० यह महाकवि निराला है इनका तहमद देखिए कितना गंदा है और इन्होंने अपना कुरता भी कंधे पर डाल रखा है और चलता जा रहा है, मस्त चाल मैंमानो इलाहाबाद की एक इनकी बपौती है।

इस महाकवि के बारे में कोई क्या सोचेगा। इसकी इन्हें कोई चिंता नहीं। यह महाशय करते हैं तो सिर्फ कवि सम्मेलन जाते समय तब यह स्वच्छ वस्त्र पहनते हैं तथा खुशबूदार साबुन से अपना मुंह धोते हैं और अपने बालों में सेंट लगाना नहीं भूलते तभी इनके ठाठ निराले होते हैं। तब ही इनका नाम 'निराला' सार्थक लगता है।

प्र०8 आपकी दृष्टि में वेशभूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

उ० आजकल लोग अपनी वेशभूषा पर सबसे अधिक ध्यान देने लगे हैं। उनके अनुसार व्यक्ति की पहचान वेशभूषा से होती है। आजकल गुणों की कद्र न होकर वेशभूषा की कद्र होती है। लोग हैसियत से बढ़कर खर्च करते हैं और अपनी झूठी शान दिखाते हैं।

प्र०9 पाठ में आए मुहावरों को छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उ०
1. दृष्टि अटकना = इस चित्र में मेरी दृष्टि अटक गई।
2. रो पड़ना = मैं तुम्हारी दर्दनाक कथा को सुनकर रो पड़ी।
3. पर्दा रखना = मैं तुम से कोई पर्दा नहीं रखता।
4. पछतावा होना = मुझे तुम्हें सहायता के लिए मना करके बड़ा पछतावा हुआ।

प्र०10 प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का उपयोग किया है, उनकी सूची बनाइए।

उ० साहित्यिक पुरखे, उपन्यास - सम्राट, युग प्रवर्तक, महान कथाकार आदि।